टिप्पणी

17

अंडमान डायरी

(श्रीकांत वर्मा)

हमारा देश प्रकृति का खूबसूरत संग्रहालय है। कहीं बर्फीली चोटियाँ हैं, कहीं हरे-भरे खेत हैं, कहीं कल-कल करती नदियाँ हैं, कहीं मरुस्थल के धोरे हैं, कहीं जंगल की वनैली हरीतिमा है, कहीं सागर की जल लहरियाँ हैं, कहीं सुदूर पानी के मध्य हरे-भरे द्वीप हैं। इन प्राकृतिक संरचनाओं ने हमारे मन को गहराई तक प्रभावित किया है। हिमालय के आश्रम, नदी के उद्गम, सागर के संगम और अरण्य की गोधूलियों की हम अक्सर चर्चा करते हैं। लेकिन इन चर्चाओं में भारत की मुख्य भूमि से दूर कुछ टापुओं की ओर हमारा ध्यान सहसा नहीं जाता। भूगोल ने इन द्वीपों की नियति में अकेलेपन का अभिशाप घोल दिया है। अकेलेपन की यातना को पहचान कर अंग्रेज़ों ने इन्हें दंडद्वीप के रूप में रूपांतरित कर दिया था। इसका प्रतिनिधि उदाहरण अंडमान द्वीप की सेल्यूलर जेल है। स्वाधीनता की चाह में अपने मूक बलिदानों से अगणित स्वतंत्रता प्रेमियों ने इन द्वीपों पर अस्थि-दान किए हैं। आज हम नीले अंबर के नीचे आज़ादी का उत्सव मनाते हैं। आज़ादी के जयघोष की नींव में विषाद के जो क्षण हैं, उसी का साक्षात्कार श्रीकांत वर्मा की इस अंडमान डायरी का विषय है। आइए, इस पाठ की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप –

- अंडमान द्वीप समूह और उसके परिवेश का वर्णन कर सकेंगे;
- अंग्रेजों द्वारा निर्मित दंडद्वीप एवं कालेपानी की अवधारणा को आत्मसात कर प्रस्तुत कर सकेंगे;
- इतिहास के बहुत-सारे गुमनाम प्रसंगों का उल्लेख कर सकेंगे;
- स्वाधीनता संग्राम के नायकों के योगदान का वर्णन कर सकेंगे;
- डायरी विधा के तत्त्वों के आधार पर पाठ का विवेचन कर सकेंगे;
- डायरी विधा के शिल्प-सौंदर्य की समीक्षा कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 17.1

प्रतिदिन डायरी लिखने की आदत डालनी चाहिए। व्यक्तिगत डायरी-लेखन आपके जीवन के प्रबंधन में मील का पत्थर साबित होगी। डायरी लिखने का सबसे बड़ा लाभ यह है कि आपके दैनंदिन जीवन की सारी घटनाओं का अभिलेख सुरक्षित रहेगा। डायरी में आप स्वयं से संवाद कायम करते हैं। इसलिए डायरी आपकी सबसे विश्वसनीय मित्र साबित होगी। डायरी लिखने वाला कभी अकेलेपन का अनुभव नहीं करता। अपनी खामियों और खूबियों का आकलन भी आप स्वयं कर पाएँगे। ग़लतियों के आलोक में सही राह चुनने में सुविधा होगी। डायरी दिनभर की घटनाओं का पुनर्स्मरण है। अत: आपकी याददाश्त बढ़ेगी। जीवन की आपाधापी में कई बातें हम दूसरों से नहीं कह पाते। डायरी मन का मीत बन कर आपके मन के बोझिलपन को कम करेगी। डायरी हमें आलस्य से मुक्ति दिलाकर कर्म की निरंतरता के लिए प्रेरित करती है। डायरी लिखने से आपके लेखन में सुधार आएगा। शब्दों के हिज्जे ठीक हो जाएँगे। शब्द-भंडार बढ़ जाएगा। इस क्रम में आपकी विचार-क्षमता एवं निर्णय लेने की कुशलता भी बढ़ेगी। इसीलिए अपने माता-पिताजी से जन्मदिन पर डायरी उपहारस्वरूप माँगिए। एक डायरी का पन्ना लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

17.1 मूल पाठ

आइए, अब हम श्रीकांत वर्मा की 'अंडमान डायरी' को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं।

अंडमान डायरी

शनिवार, 4 जनवरी 1986, पोर्ट ब्लेयर

हर हँसी के पीछे आँसू होते हैं। कुछ आँसू यहाँ भी बहाए गए, पोर्ट ब्लेयर में, जो कभी 'काला पानी' के नाम से जाना जाता था। 'काला पानी' हमारी भाषा का एक मुहावरा बन गया-सुदूर निष्कासित जिसके लौटने की कोई उम्मीद नहीं।

मगर काला तो नहीं यह पानी? सुंदर है, हरा है, नीला है, चारों ओर द्वीप हैं, मूँगिया, पहाड़ी द्वीप। जैसे समुद्र पर कछुए आसन मारकर बैठ गए हों और बैठे ही हों शताब्दियों से। तीन सौ से अधिक द्वीप। सुरम्य, मनोरम।

फिर क्या काला था? काले थे हिंदुस्तानी, हमारे पूर्वज, क्रांतिकारी, देशभक्त, जिन्हें गोरे शासक इसलिए यहाँ भेजते थे कि उन्हें देशप्रेम का मज़ा चखाया जाए। उन्हें पता चले कि यंत्रणा, असह्य यंत्रणा, मानवीय यंत्रणा क्या होती है?

अपराह्न जब मैं 'सेल्यूलर जेल' गया तो मैंने देखा, अपनी सभ्यता पर नाज़ करने वाले अंग्रेज़ कितने कुरूप, बदशक्ल, मनहूस, अमानुषिक कारागृह खड़े कर सकते हैं। मानवीय स्वतंत्रता की पक्षधरता का दावा करने वाली गोरी जाति किस तरह इंसान को उन सींखचों में एक नहीं, दो-दो दशक, दस-दस, बीस-बीस वर्ष कैद कर रख सकती है। इन सींखचों में जहाँ से कोई

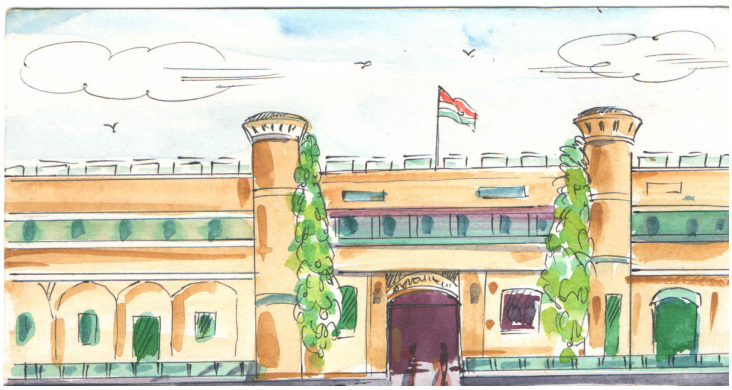

चित्र 17.1 : सेल्लूलर जेल

निकल नहीं सकता और कोई प्रवेश नहीं कर सकता। एक पतली-सी सूरज की किरण को छोड़कर जो संसार को सुखभरी नींद से जगाती है; लोग-बाग अँगड़ाइयाँ लेते, ओंठों पर मुस्कान लिए उठते हैं, किरण जो औरों के लिए आशा का संदेश लिए आती है। इन अभागों के लिए जो यहाँ अंडमान में काला पानी भोग रहे थे, सुबह कभी कोई आशा का संदेश नहीं लाई और शाम आई तो वह भी डरती-डरती उनकी कोठरियों की दहलीज़ पर एक स्वप्न मात्र रख गई-आज़ादी का स्वप्न, जिसे उन्होंने बरसों देखा, सँजोकर रखा। आख़िर इस स्वप्न के लिए ही तो उन्होंने सजाएँ भोगी थीं। उनका जुर्म, अपराध क्या था? उन्होंने स्वप्न देखा था। और वे उसे असलियत में परिणत करना चाहते थे।

कितनों ने दम तोड़ दिया, भूख और बीमारी से। क्या देते थे उन्हें वे, भोजन के नाम पर? मुझे बताया गया कि रात को लोगों पर कोड़े बरसाए जाते थे, या गालियाँ; दूसरे सवेरे, जब अंग्रेज़ जेलर के सामने उनकी पेशी होती थी। मगर किसी ने आत्मसमर्पण नहीं किया (हथियार डालने का मुहावरा ग़लत होगा। हथियार थे ही कहाँ, उनके पास)। नीचे की चार कोठरियाँ 'काल कोठरियाँ' हैं, जहाँ उन्हें फाँसी से पहले रखा जाता था।

इन काल कोठरियों के ठीक सामने कुछ ही कदम की दूरी पर 'फाँसीघर' है। बाहर एक चबूतरा। फाँसी के पहले, तड़के, कैदी को इस चबूतरे पर लाया जाता था। अंग्रेज़ बड़े 'उदार' थे। मौत के पहले कुछ क्षण वे आदमी को खुली हवा में साँस लेने की छूट देते थे। वे बड़े 'धर्मभीरु' थे। है, न? तभी तो कैदी को स्नान-ध्यान कराया जाता था, गीता-बाईबल-कुरान के पाठ की सुविधा दी जाती थी और उनके 'स्वतंत्रता प्रेम' की तो अन्यत्र कोई मिसाल ही नहीं! फाँसी पर चढ़ाने के पहले पूछते थे, 'अंतिम इच्छा?'

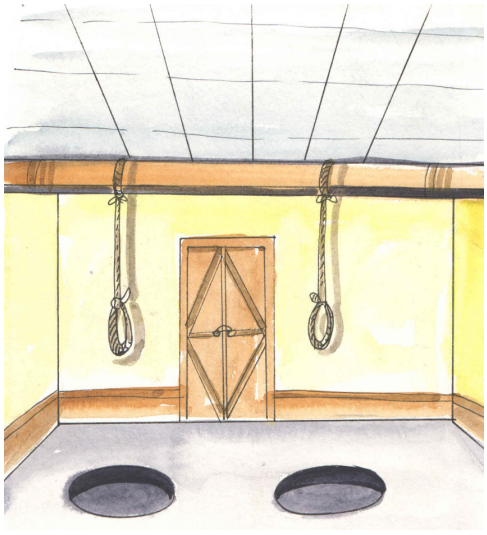

चित्र 17.2 : फाँसी घर

कितनों ने उत्तर दिया होगा-'आज़ादी।' क्या उन्होंने उनकी अंतिम इच्छा पूरी की?

शेक्सपियर के नाटकों में ट्रेज़ेडी ट्रेज़ेडी रहती है, कॉमेडी कॉमेडी। मगर वे शेक्सपियर को घर भूल आए थे। यहाँ आकर उन्होंने सीखा था, ट्रेज़ेडी को कॉमेडी में और कॉमेडी को ट्रेज़ेडी में बदलना।

शब्दार्थ

सुरम्य	-	बहुत सुंदर
तड़के	-	सुबह, अँधेरे मुँह
मनोरम	-	मन को लुभाने वाला, सुंदर
मूँगिया	-	मूँगे के रंग का हरा
धर्मभीरु	-	धार्मिक आचरण करने वाला

टिप्पणी

तभी तो वे फाँसी की सुबह तमाम कोठरियों के द्वार खोल देते थे, ताकि बाहरी सींखचों से कैदी देख सकें अपना भविष्य-फाँसी, आज़ादी की माँग करनेवालों का भविष्य-फाँसी, विदेशी शासकों को बाहर खदेड़ने का मंसूबा रखनेवालों का भविष्य-फाँसी, फाँसी पर चढ़ने का हौसला रखनेवालों का भविष्य-फाँसी और फाँसी की रस्सियों की परवाह न करनेवालों का भविष्य-फाँसी! देखो, तुम्हें, इसी तरह फाँसी पर चढ़ाया जाएगा।

देखो, फाँसी पर लटककर तुम्हारी जीभ, आज़ादी का नारा लगानेवाली जीभ, इसी तरह, बाहर निकल जाएगी।

देखो, अपना हश्र देखो।

देखो, अपनी लड़ाई का हश्र देखो।

देखो, अपने देश का हश्र देखो।

देखो, हम तुम्हें किस तरह नहला-धुलाकर पवित्र करते हैं (गंगाजल नहीं हुआ तो क्या हुआ, काला पानी तो है), और अब तुम्हें उस लोक में भेजते हैं, जहाँ फाँसी नहीं होती, कम-से-कम 'आज़ादी' चीख पड़ने पर फाँसी नहीं होती, जहाँ कोड़े नहीं लगाए जाते (नरक में ज़रूर लगाए जाते हैं, मगर अंडमान आने के बाद नरक जाने की ज़रूरत ही क्या?), जहाँ वह शरीर ही नहीं जिसे लटकाया जा सके।

और रोज़ ही या अक्सर यह दृश्य दोहराया जाता। फाँसीघर में एक साथ तीन व्यक्तियों को फाँसी देने की व्यवस्था है। इसका अर्थ यह हुआ कि कई बार तीन-तीन व्यक्तियों को एक साथ फाँसी दी जाती थी।

फाँसी के पहले कितनी चीखों से आसमान भर गया होगा, कुछ रोये होंगे, कुछ चिल्लाए होंगे, कुछ ने नारा लगाया होगा-'इनकिलाब जिंदाबाद', 'क्रांति अमर रहे।'

जिन्होंने ये नारे लगाये वे पागल थे। कोई विक्षिप्त व्यक्ति ही स्वयं को खतरे में डालता है। समझदार कोई जोखिम नहीं उठाते, कोई खतरा मोल नहीं लेते। चाय भी फूँक-फूँककर पीते हैं।

फाँसीघर के सामने की कारा की दूसरी मंजिल की सबसे अंतिम कोठरी सावरकर की थी, जिन्हें सबसे खतरनाक कैदी माना जाता था। 1910 में उन्हें यहाँ लाया गया। 1921 में इस जेल से उनकी 'रिहाई' हुई। उनकी कोठरी को एक लोहे की दीवार खड़ी करके काराघर से अलग कर दिया गया था। कोई भी कोशिश कामयाब न हो, भाग निकलने की।

बरसों यहाँ रहने के बावजूद सावरकर को यह न मालूम हो सका कि उनके भाई भी इसी काराघर में कैद हैं।

मेरे मन में सावरकर के प्रति पूर्वग्रह था, क्योंकि उनका संबंध 'हिंदू महासभा' से रहा। मैंने यह नहीं सोचा कि एक हिंदू के रूप में अपनी अस्मिता की तलाश सांप्रदायिकता नहीं।

कम-से-कम ऐसा व्यक्ति सांप्रदायिक नहीं हो सकता, जिसने देशभक्ति की इतनी बड़ी सज़ा भोगी हो।

शब्दार्थ

यंत्रणा – पीड़ा, लेश
मंसूबा – इरादा, इच्छा
अपराह्न – दोपहर बाद का समय
हश्र – अंत
दहलीज – देहरी, चौखट की जगह
सींखचों – सलाखों
विक्षिप्त – पागल
कारागृह – कैदखाना
प्रतिमा – मूर्ति
अस्मिता – अपना अस्तित्व
फतवा – यह अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है इस्लामी कानून की रोशनी में हुक्म जारी करना।

जेल के बाहर सावरकर की प्रतिमा स्थापित की गई है, मेरा सिर झुक गया, श्रद्धा में। और कुछ शर्म में। हम कितने शीघ्र दूसरों के विषय में फतवा दे देते हैं। और अगर तर्क के जरिए तुम लोग यह प्रमाणित कर भी लो कि सावरकर सांप्रदायिक थे, तो मुझे तुम्हारा तर्क मंजूर नहीं।

चित्र 17.3 : सावरकर की प्रतिमा

मैं कवि हूँ। मैं तर्क नहीं जीता। मेरे लिए सावरकर वह व्यक्ति है जो हाथों-पैरों में हथकड़ी-बेड़ी पहने बरसों इस भयानक कोठरी के अँधेरे में, कैद रहा, मगर न वाणी अवरुद्ध हुई न आत्मा।

शाम हो चली है। समुद्र पर चिड़ियाँ मँडरा रही हैं। हज़ारों की तादाद में। कौन जानता है, ये हमारे पूर्वजों की मृतात्माएँ हों।

कुछ मेरी खिड़की के शीशों से आकर टकरा जाती हैं। या वे मुझे जगा रही हैं, गहरी नींद से। जागो, तुम नींद में हो। नींद में चल रहे हो, नींद में लिख रहे हो, नींद में जीवन जी रहे हो।

जीवन वह है जो इस सींखचों में रहनेवालों ने जिया।

मैंने अपने कमरे की बत्तियाँ नहीं जलायीं। रहने दो यह अंधकार। होने दो पूर्वजों से, मृतात्माओं से यह संवाद।

नीचे, पहाड़ी के नीचे समुद्र है। पानी, दूर तक फैला पानी। अरे, यह तो सचमुच काला हो चला। यह पानी।

बोध प्रश्न 17.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प छाँटकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'काला पानी' का अर्थ है–

   (क) मूँगिया पहाड़ी द्वीप

   (ख) हरा-नीला पानी

   (ग) सुदूर निष्कासित जिसके लौटने की कोई उम्मीद नहीं

   (घ) पोर्ट ब्लेयर में बहाए गए आँसू

2. लेखक के अनुसार 'काला' क्या था–

   (क) हमारे पूर्वज जो क्रांतिकारी थे

   (ख) समुद्र का गहरा पानी

   (ग) असह्य भोगी जानेवाली यंत्रणा

   (घ) समुद्र पर आसन मार कर बैठा कछुआ-सदृश्य द्वीप

3. लेखक के अनुसार कुरूप, बदशक्ल, मनहूस क्या है–

   (क) कारागृह

   (ख) अंग्रेज़

   (ग) मूँगिया पहाड़ी द्वीप

   (घ) समुद्र

17.2 आइए समझें

प्रिय विद्यार्थियो! 'अंडमान' श्रीकांत वर्मा की डायरी का अंश है। हिंदी साहित्य की कई नवीन विधाओं की तरह यह भी एक महत्वपूर्ण और रोचक विधा है। इस पाठ को भली-भाँति समझने के लिए आइए, पहले जान लें कि 'डायरी' है क्या?

डायरी क्या है?

डायरी निजता का गोपनीय अभिलेख है। किसी भी घटना के प्रति व्यक्ति के तात्कालिक मनोवेगों की अभिव्यक्ति का माध्यम डायरी बनती है। वैसे तो डायरी एक निजी सम्पत्ति मानी जाती है, लेकिन कुछ लोगों की भावनाएँ साधारणीकृत होकर पूरी मानवता की संपत्ति बन जाती हैं। डायरी में लेखक निर्बंध होकर अपने अंत:करण से साक्षात्कार करता है। वहाँ न तो समझौते की छाया होती है और न ही स्वार्थ की चापलूसी। न किसी के नाराज होने का भय होता है और न ही किसी को प्रसन्न करने की अभिलाषा। घटनाओं से भरी ज़िंदगी में हरेक पल आगामी पल से पृथक होता है। डायरी ऐसे ही छोटे-छोटे पलों का बयान होती है। डायरी में लेखक क्षणजीवी होकर अपने दैनंदिन जीवन का पीछा करता है और घटनाओं को हू-ब-हू लिख लेता है। इसलिए डायरी किसी घटना का प्रथम दृष्टया रिपोर्ट होती है। इसमें आवेग अत्यन्त प्रगाढ़ होकर प्रकट होता है। डायरी एक अनौपचारिक विधा है और उस पर प्रकाशन का दबाव नहीं होता है। इसीलिए भय, लोभ, प्रदर्शन की छाया उस पर नहीं पड़ती। अवचेतन में जो मंतव्य छिपे होते हैं, वे सहज ही बगैर किसी विचारधारा के मुखौटे के इस विधा में उद्घाटित हो जाते हैं। निज का खूबसूरत प्रस्फुटन ही डायरी की उजास है।

टिप्पणी

ध्यान से विचार करें तो डायरी कई विधाओं का चौराहा है। कई विधाएँ इसमें सहज भाव से समाहित रहती हैं। कभी यह आत्मकथा का आभास देती है, कभी घुमक्कड़शास्त्र की झलक देती है, कभी संस्मरण की जादुई दुनिया की सैर कराती है। अपने निर्माण में यह अनौपचारिक इतिहास भी है और रिपोर्टिंग भी। संकट के पलों में डायरी व्यक्ति का आत्मीय सुबंधु हो जाती है। हर समय की ओट में कुछ अँधेरे पल छिपे होते है, डायरी उन कठिन समय के खलनायकों का पता-ठिकाना और चाल-चरित्र का रहस्योद्घाटन करती चलती है। कभी-कभी इसके ठीक उलट भी घटित होता है। कठिन समय के मानवीय चेहरों को भी यह बताती है।

'डायरी' एक अंग्रेज़ी शब्द है। शब्दकोश में इसके कई पर्याय मिलते हैं। जनजीवन में डायरी के लिए दैनिकी, दैनंदिनी, परामर्श-पुस्तिका, रोजनामचा आदि कहा जाता है। संस्कृत में इसे दिन पत्रिका या दैनिकवृत्त पुस्तक कहा जाता है।

आप जानते हैं कि जिस प्रकार कहानी, नाटक, उपन्यास आदि विधाओं के तत्त्व होते हैं, उसी प्रकार डायरी के भी कुछ तत्त्व होते हैं। ये हैं वैयक्तिकता, भावाभिव्यक्ति, तिथिक्रम, तात्कालिक प्रतिक्रिया, परिवेशांकन, आत्मविश्लेषण, वास्तविकता, निजदृष्टि तथा भाषा-शैली। आइए, अब ये देखें कि 'अंडमान' में ये विशेषताएँ किस सीमा तक मिलती हैं।

(1) वैयक्तिकता : आत्मस्वीकृति डायरी विधा की प्रधान खूबी होती है। अपने अवचेतन मन को डायरी लेखक बिना किसी दुराव-छिपाव के शब्दबद्ध करता चलता है। 'मैं' शैली में मनोभावों का अंकन 'अंडमान' डायरी में भी सहज ही उपलब्ध है। लेखक की पोर्ट ब्लेयर देखने की इच्छा बरसों से थी। स्वाधीनता की चाह में जिन स्वतंत्रता-सेनानियों ने सीखचों के पीछे घुट-घुट कर प्राण न्यौछावर कर दिए, उनकी स्मृति आते ही लेखक भाव-विभोर हो उठता है। वह डायरी नहीं लिख रहा है, बल्कि रो रहा है। प्रायश्चित का प्रलाप डायरी के वातावरण में अवसाद बन कर उभर आया है। भावना के ज्वार में वह सावरकर के प्रति आत्मग्लानि महसूस करता है। डायरी में इस अंश को देखिए : ''मेरे मन में सावरकर के प्रति पूर्वग्रह था, क्योंकि उनका संबंध 'हिंदू महासभा' से रहा। मैंने यह नहीं सोचा कि एक हिंदू के रूप में अपनी अस्मिता की तलाश सांप्रदायिकता नहीं।''

आगे श्रीकांत वर्मा सावरकर के प्रसंग में आत्माभियोग और आत्मस्वीकार की मुद्रा में कहते हैं : ''मैं कवि हूँ। मैं तर्क नहीं जीता। मेरे लिए सावरकर वह व्यक्ति है जो हाथों-पैरों में हथकड़ी-बेड़ी पहने बरसों इस भयानक कोठरी के अंधेरे में कैद रहा, न वाणी अवरुद्ध हुई न आत्मा''। कहना होगा कि वैयक्तिकता के प्रगाढ़ क्षणों से यह पूरी डायरी भरी पड़ी है।

(2) भावाभिव्यक्ति : 'अंडमान' में लेखक बंधनहीन होकर अपने अंत:करण से मुलाकात करता है। भावना की तरल, सरल और निश्छल अभिव्यक्ति इस डायरी को खास बनाती है। जब लेखक सेल्यूलर जेल देखकर लौटता है, तो वह अंधेरे बंद कमरे में निश्चेष्ट और किंकर्तव्यविमूढ़ की भावदशा में लिखता है : ''मैंने अपने कमरे में बत्तियाँ नहीं जलायीं। रहने दो अंधकार। होने दो पूर्वजों से, मृतात्माओं से संवाद।''

(3) तिथिक्रम : डायरी लिखने से पहले बहुधा दिनांक, माह और वर्ष का उल्लेख अनिवार्य है। व्यवस्थित और नियमित डायरी-लेखन में इस अलिखित नियम का पालन अवश्य होता है। 'अंडमान' में लेखक ने शास्त्रीय डायरी-लेखक की तरह, ''शनिवार, 4 जनवरी, पोर्ट ब्लेयर'' दर्ज किया है। लेखक ने तीन दिनों तक पोर्ट ब्लेयर का प्रवास किया है और तीनों दिन के भ्रमण का विवरण डायरी में तिथि वार दर्ज किया है। यह 1986 का साल है। अत: डायरी तत्त्व की दृष्टि से यह एक निर्दोष डायरी है।

(4) तात्कालिक प्रतिक्रिया : घटनाओं से भरी ज़िंदगी में हरेक दिन अगले दिन से अलग होता है। जो क्षण गुजर जाता है, उसे दुबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। स्मृति के आधार पर बीते दिन को हम पुन: डायरी के पन्नों पर सौ फीसदी प्रकट या अभिव्यक्त नहीं कर सकते। श्रीकांत वर्मा ने 'अंडमान' प्रवास की प्रत्येक दिन की घटनाओं की अंत:प्रक्रिया को लिखित रूप दिया है। इस पाठ में काल कोठरियों और फाँसीघर को देखकर अपनी मनोदशा को तुरंत ही लेखक ने दर्ज किया है। निस्संदेह इस डायरी की तात्कालिक प्रतिक्रिया का साहित्यिक से अधिक ऐतिहासिक महत्व है।

(5) परिवेशांकन : डायरी रचयिता जाने-अनजाने अपने परिवेश का वर्णन करते चलता है। ऋतुचक्र, स्थानीय संरचना उसके लेखन में सहज भाव से आ ही जाता है। 'अंडमान' डायरी में समुद्र के रंग, वहाँ के परिंदों की चेष्टाओं, सूर्यास्त आदि का स्वाभाविक वर्णन लेखक ने किया है। शुरू के अंश में ही समुद्र के पानी का कवियोचित वर्णन मिलता है। ''मगर काला तो नहीं यह पानी? सुंदर है, हरा है, नीला है, चारों ओर द्वीप हैं मूँगिया, पहाड़ी द्वीप जैसे समुद्र पर कछुए आसन मार कर बैठ गए हों और बैठे हो शताब्दियों से।'' श्रीकांत वर्मा अपने समय के सिद्ध पत्रकार रहे हैं। अत: उनकी डायरी से सहसा रिपोर्टिंग का आनंद भी प्राप्त होता है। प्रस्तुत पाठ में परिवेशांकन की प्रवृत्ति सहज ही उपलब्ध है।

(6) आत्मविश्लेषण : आत्मविश्लेषण की सबसे आदर्श विधा डायरी है। लेखक इसमें निर्मम होकर अपने व्यक्तित्व और वैचारिकी का पोस्टमार्टम कर पाता हैं। अंडमान डायरी में लेखक का 'कन्फेशन' जबर्दस्त है। क्रांतिकारी सावरकर का जीवन अपयश और एकाकीपन का दुर्लभ संयोग हैं। दुनिया में शायद ही कोई ऐसा उदाहरण मिले जो क्रांतिकारी कवि भी हो, साहित्यकार भी हो और अच्छा लेखक भी हो। इसीलिए डायरी के पन्नों पर लेखक आत्मग्लानि की मुद्रा में यह स्वीकार करता है, ''जेल के बाहर सावरकर की प्रतिमा स्थापित की गई है, मेरा सिर झुक गया श्रद्धा में। और कुछ शर्म में। हम कितने शीघ्र दूसरों के विषय में फतवा दे देते हैं और अगर तर्क के जरिए तुम लोग यह प्रमाणित कर भी लो तो कि सावरकर सांप्रदायिक थे, तो मुझे तुम्हारा तर्क मंजूर नहीं।'' उद्धृत अवतरण आत्मविश्लेषण का प्रतिनिधि उदाहरण है।

(7) वास्तविकता : डायरी लेखन वास्तविकता का आईना है। किसी बात को कहने के लिए अन्य विधाओं में फैंटेसी या व्यंजना का संसार गढ़ना पड़ता है। लेकिन डायरी में निरावरण होकर लेखक घटनाओं का उल्लेख करता है। संकोच या भय, श्रेय या प्रेय की भावना जाती रहती है। 'अंडमान' के जेलखाने के अंदर का यथातथ्य वर्णन लेखक करता है। डायरी के इस अंश को पढ़िए :

''इन काल कोठरियों के ठीक सामने कुछ ही कदम की दूरी पर 'फाँसीघर' है। बाहर एक चबूतरा। फाँसी के पहले, तड़के, कैदी को इस चबूतरे पर लाया जाता था। अंग्रेज़ बड़े 'उदार' थे। वे बड़े 'धर्मभीरू' थे। है, न? तभी तो कैदी को स्नान-ध्यान कराया जाता था, गीता- बाईबल-कुरान के पाठ की सुविधा दी जाती थी और उनके 'स्वतंत्रता प्रेम' की तो अन्यत्र कोई मिसाल ही नहीं! फाँसी पर चढ़ने के पहले पूछते थे - 'अन्तिम इच्छा?' कितनों ने उत्तर दिया होगा - 'आज़ादी।' क्या उन्होंने उनकी अंतिम इच्छा पूरी की?''

(8) **निज दृष्टि :** डायरी व्यक्तिमन का पुनर्पाठ होती है। कई बार हम निजी विचार सबके सामने साझा करते हैं लेकिन कुछ मंतव्य हम साझा नहीं करते। ऐसे निजी क्षण हम गोपनीय ढंग से डायरी के पन्नों पर लिख जाते हैं। आधुनिकता की सबसे बड़ी उपलब्धि व्यक्तिवाद की प्रतिष्ठा थी। लेकिन राजनीति, बाजार, मीडिया, तकनीक ने हमारे व्यक्तित्व का अपहरण कर लिया है। ऐसे पलों में डायरी व्यक्ति की निजता की रक्षा का माध्यम बन जाता है। श्रीकांत वर्मा अपने समय के प्रश्नों से मुठभेड़ करने वाले चिंतक के रूप में डायरी के पृष्ठ पर अवतरित होते हैं। यह समूची डायरी उनकी निजी दृष्टि एवं आत्मस्वीकार का अप्रतिम दस्तावेज़ है। वे स्वीकार करते हैं कि सावरकर के प्रति मेरे मन में पूर्वाग्रह था। लेकिन अंडमान की कालकोठरियों को देख कर वे स्वयं को संशोधित करते हैं कि, ''मेरा सिर झुक गया, श्रद्धा में और कुछ शर्म में''।

(9) **भाषा-शैली :** डायरी के लेखक भाषिक तौर पर सचेत नहीं होते। भावावेग में मंतव्य का पीछा करते हुए वाक्य अधूरे रह जाते हैं। कई बार अन्य विदेशी भाषाओं के शब्दों का बेझिझक प्रयोग करते चलते हैं। लेकिन श्रीकांत वर्मा की विवेच्य डायरी निर्दोष और निर्मल भाषा का अद्भुत नमूना है। राजनीति के धूल-धक्कड़ के बीच उन्होंने अपनी शब्द-साधना को गहन मानवीय संवेदना से परिभाषित किया है। डबडबायी हुई आँखों से निष्कवच होकर वे डायरी में अपने को खोलते चले जाते हैं। भावना के प्रगाढ़ क्षणों में भाषा उनकी सहचरी हो गई है। एक या दो शब्द के बाद ही पूर्ण विराम लगाते हैं। हिंदी कितनी प्रांजल हो सकती है इसे आद्यंत 'अंडमान डायरी' में महसूस कर सकते हैं। आत्मपीड़ा के तीव्र उन्मेष के क्षणों का साक्ष्य है इसमें, इसका निम्नलिखित अंश देखिए :

''शाम हो चली है। समुद्र पर चिड़ियाँ मँडरा रही हैं। हजारों की तादाद में। कौन जानता है, ये हमारे पूर्वजों की मृतात्माएँ हों। मैंने अपने कमरे की बत्तियाँ नहीं जलायीं। रहने दो अंधकार। होने दो पूर्वजों से, मृतात्माओं से यह संवाद। नीचे, पहाड़ी के नीचे समुद्र है। पानी, दूर तक फैला पानी। अरे, यह तो सचमुच काला हो चला। यह पानी।'' पूरे पाठ में 'ट्रेजेडी' और 'कॉमेडी' दो शब्द ही अंग्रेज़ी के आए हैं। लेकिन वे भर्ती के प्रतीत नहीं होते हैं। प्रसंगोचित हैं।

पाठगत प्रश्न 17.1

1. सेल्यूलर जेल के कमरे की संरचना कैसी थी –

   (क) हवादार

   (ख) नींद लेने की सुखद जगह

   (ग) एक पतली-सी सूरज की किरण पहुँचने वाली तंग कोठरी

   (घ) स्वप्नगृह

2. फाँसीघर के सामने लेखक को किस नाटककार का स्मरण होता है –

   (क) कालिदास (ख) भारतेंदु

   (ग) मोहन राकेश (घ) शेक्सपियर

3. समुद्र पर मँडरा रही चिड़ियाँ कैसी प्रतीत हुई –

   (क) पूर्वजों की मृतात्माओं की तरह

   (ख) कोठरी में कैद आत्मा की तरह

   (ग) नील गगन में स्वच्छंद प्राणी की तरह

   (घ) मनमोहक दृश्य की तरह

17.3 भाषा एवं शैली

इस पाठ की भाषा बहुत सरल और प्रवाहयुक्त है। लेखक के भाषा प्रयोग को समझने के लिए कुछ बातें ध्यान में रखने की जरूरत है। श्रीकांत वर्मा मूलत: कवि हैं। लेकिन उन्होंने आजीवन पत्रकार कर्म का निर्वहन भी किया है। इसीलिए 'अंडमान' डायरी एक ओर भावुकता का अनूठा नमूना प्रस्तुत करती है। दूसरी तरफ इसका गद्य रिपोर्टिंग का भी आनंद देता है। इस पाठ में अभिधा और व्यंजना का खूबसूरत संगम है। भावना के आवेग में लेखक तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशज किसी शब्द से बचने की कोशिश नहीं करते हैं। इस मामले में श्रीकांत वर्मा भाषा के जादूगर हैं। उनकी भाषा, भाव की अनुगामिनी है। प्रसंगानुकूल भाषा के कारण पाठ को समझने में कोई कठिनाई नहीं होती है। शब्द इतने जटिल नहीं हैं कि शब्दकोश उलटना पड़े या अर्थग्रहण में कठिनाई हो। पूरी डायरी में तीन शब्द अंग्रेजी के हैं – 'जेलर, ट्रेजेडी और कॉमेडी'। यह पाठ यात्रा का भी आभास देती है। इसलिए वर्णन में समुद्र के दृश्यों, स्थानों की संरचना, परिंदों की उड़ान का सम्मोहक वर्णन है। श्रीकांत वर्मा की भाषा तत्सम प्रधान

है। पूरे पाठ में ऐसे शब्द भरे पड़े हैं। जैसे– द्वीप, निष्कासित, सुरम्य, मनोरम, यंत्रणा, कारागृह, दशक, इच्छा, व्यवस्था, क्रांति, विक्षिप्त, अस्मिता, वाणी, अवरुद्ध, आत्मा, पूर्वज, मृतात्मा, संवाद।

उर्दू के जो शब्द लोक में घुल-मिल गए हैं, सहज ही पाठ में मौजूद हैं। उदाहरण देखें - बदशक्ल, मनहूस, उम्मीद, जुर्म, तलाश, पेशाब, पेशी, आजादी, हौसला, परवाह, इनकलाब, जोखिम, मंजिल, कामयाब आदि।

डायरी में दो जगहों पर मुहावरे का स्वाभाविक प्रयोग है। लेकिन ये मुहावरे लोक में बहुप्रचलित हैं। 'हथियार डालना' और 'फूँक-फूँक कर पीना'। श्रीकांत वर्मा छोटे वाक्यों के कुशल प्रयोक्ता हैं। पूरा पाठ ही छोटे वाक्यों का खजाना है।

17.4 प्रमुख व्याख्याएँ

आपने पूरा पाठ पढ़ लिया है और डायरी के तत्वों से भी आप परिचित हो चुके हैं। आइए पाठ में आए कुछ महत्वपूर्ण अंशों की व्याख्या को पढ़ कर समझते हैं -

अंश-1

अपराह्न जब 'सेल्यूलर जेल' गया तो मैंने देखा, अपनी सभ्यता पर नाज़ करने वाले अंग्रेज़ शासक कितने कुरूप, बदशक्ल, मनहूस, अमानुषिक कारागृह खड़े कर सकते हैं। मानवीय स्वतंत्रता की पक्षधरता का दावा करने वाली गोरी शासक जाति किस तरह इनसान को उन सींखचों में एक नहीं, दो-दो दशक, बीस-बीस वर्ष कैद कर रख सकती है।

प्रसंग : लेखक हिंद महासागर में स्थित टापू अंडमान की यात्रा पर गया है। अंडमान द्वीप हमारे सांस्कृतिक इतिहास का एक त्रासद अध्याय है। स्वाधीनता-सेनानियों को यहाँ कैद में रखा जाता था। यह भारत की मुख्य भूमि से हज़ारों किलोमीटर दूर बंगाल की खाड़ी में स्थित है। यह भारतीय लोक जीवन में काला पानी के नाम से कुख्यात है। डायरी का लेखक शनिवार 4 जनवरी 1986 को पोर्ट ब्लेयर के सेल्यूलर जेल में पूर्वज सेनानियों के कैदखाने को देख कर विषाद में डूब गया।

व्याख्या : बहुधा भारत में शासक की हैसियत से आए अंग्रेज़ों को लोक कल्याणकारी सत्ता की स्थापना का श्रेय दिया जाता है। संविधान से लेकर विविध जनतांत्रिक संस्थाओं की नींव रखने में इन गोरे शासकों का निजी स्वार्थ ही प्रबल था। ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना सन् 1600 ई. में हुई थी। तब से लेकर आज़ादी पर्यंत अनेक रूपों में वे भारतीय धन का शोषण एवं उपभोग करते रहे। भारत जो सोने की चिड़िया थी, गरीबी और दुर्दशा का शिकार हुई। इस देश को परतंत्र रखने के लिए अंग्रेज़ों ने क्रूर दंडनीति का आविष्कार किया था। इसी का जीवंत उदाहरण अंडमान के पोर्ट ब्लेयर का सेल्यूलर जेल है। 'काला पानी' की सज़ा पाए लोगों के लौटने की कोई उम्मीद नहीं होती थी। वे घुट-घुट कर काल कोठरियों में अपनी जीवन-लीला समाप्त करते थे। गोरे शासक ऐसी यातनादायी सज़ा से भारतीय समाज में उठ

रहे आज़ादी के आंदोलन को आतंकित करना चाहते थे। लेकिन ऐसे दमन और उत्पीड़न के बावजूद स्वतंत्रता-प्रेमी क्रांतिकारियों के मनोबल पर कोई असर नहीं पड़ा। मानवाधिकार के प्रवक्ता और उदारता का दंभ भरने वाली इस अंग्रेज़ शासक जाति ने 'सेल्यूलर' जेल में यातना का काला और अमानुषिक अध्याय रचा था। इस जेल की नींव 1897 में रखी गई थी। जेल के अंदर 694 कोठरियाँ हैं। प्रत्येक कोठरी इतनी गोपनीय एवं अकेली थी कि किसी पड़ोसी कैदी के चेहरे की झलक असंभव थी। टट्टी और पेशाब के लिए बाहर जाने की अनुमति नहीं मिलती थी। इस कारागार की सात शाखाएँ थीं। द्वितीय महासमर में जापानियों की बमबारी की वजह से अब इसकी तीन शाखाएँ ही बचीं हैं। डायरी लेखक सभ्यता पर नाज़ करने वाले अंग्रेज़ों के पाखंड की भर्त्सना करता है। आज़ादी का स्वप्न देखनेवाले और सजा भोगनेवाले सेनानियों की तपस्या और बलिदान को देख कर लेखक भावुक हो जाता है।

विशेष : स्वतंत्रता दुर्लभ उपहार है, इसका अनुभव अंडमान की काल-कोठरियों के सामने शिद्दत से लेखक को होता है। इसीलिए लेखक के लिए यह तीर्थ यात्रा के समान है। इस अंश में लेखक आत्मालाप, रिपोर्टिंग का भी अहसास कराता है।

अंश-2

शेक्सपियर के नाटकों में ट्रेज़ेडी ट्रेज़ेडी रहती है, कॉमेडी कॉमेडी। मगर वे शेक्सपियर को घर भूल आए थे। यहाँ आकर उन्होंने सीखा था, ट्रेज़ेडी को कॉमेडी में और कॉमेडी को ट्रेज़ेडी में बदलना।

प्रसंग : लेखक 'सेल्यूलर' जेल के फाँसीघर के एक चबूतरे के सामने फाँसी के पूर्व की औपचारिक तरीकों पर विचार करता है। फाँसी की पूर्व-संध्या पर, स्वतंत्रता सेनानियों को, 'काल कोठरी' में आखिरी रात मृत्यु की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी।

व्याख्या : अंग्रेज़ उपनिवेश निर्माताओं को अपनी सभ्यता और विरासत पर बहुत घमंड था। शेक्सपियर का साहित्य उनके लिए गौरव की वस्तु थी। लेकिन शेक्सपियर के साहित्य से प्राप्त संदेश के विपरीत उनका आचरण था। वे भारत में पाखंडपूर्ण, अमानवीय और क्रूर आचरण करते थे। वे मानवता का ढोंग रचते थे। अंग्रेज़ फाँसी से पूर्व उदारता का दिखावा करते थे। मृत्यु से पूर्व वे व्यक्ति को खुली हवा में साँस लेने की छूट देते थे। वे धार्मिक होने का भी अभिनय करते थे। फाँसी पाने वाले को धर्मानुसार गीता-बाईबल-कुरान के पाठ की सुविधा दी जाती थी। उनकी आखिरी इच्छा का भी ख्याल रखा जाता था। डायरी लेखक यहीं पर अंग्रेज़ी शासकों से जिरह करते हैं कि अंतिम इच्छा में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने 'आजादी' का जयघोष किया होगा। लेकिन उनकी इच्छा के विरूद्ध उन्हें फाँसी के तख्ते पर चढ़ा दिया गया होगा। डायरी-लेखक का करुणा मिश्रित व्यंग्य विवेच्य पंक्तियों में मुखर हो उठा है। अंग्रेज़ शासकों के खाने के दाँत और दिखाने के दाँत अलग-अलग थे। शेक्सपियर की मानवता की वे दुहाई देते थे। लेकिन गुलामी कायम रखने में उनकी बर्बरता की मिसाल नहीं मिलती। शेक्सपियर के सुखांत या दु:खांत नाटकों का अंक अनुमेय है। लेकिन भारत में रहकर इन अंग्रेज़ शासकों ने दु:खांत-सुखांत का एक हास्यास्पद समीकरण तैयार किया था। लेखक का आशय यह है कि फाँसी के कारुणिक प्रसंग में भी अंग्रेज़ों ने नाटकीयता का ढोंग कायम रखा था।

टिप्पणी

विशेष : लेखक ने इतिहास के झरोखे से झाँक कर पश्चिम के औपनिवेशिक चरित्र का बेबाकी से उद्घाटन किया है। भारतीय अस्मिता की तलाश में लेखक ने गुमनाम शहीदों के प्रति आदरांजलि प्रकट की है। भावना की चासनी में डूब कर भाषा कविता का आभास देती है।

अंश-3

मेरे मन में सावरकर के प्रति पूर्वग्रह था, क्योंकि उनका संबंध 'हिन्दू महासभा' से रहा। मैंने यह नहीं सोचा कि एक हिंदू के रूप में अपनी अस्मिता की तलाश सांप्रदायिकता नहीं। कम-से-कम ऐसा व्यक्ति सांप्रदायिक नहीं हो सकता, जिसने देशभक्ति की इतनी बड़ी सज़ा भोगी हो।

प्रसंग : सेल्यूलर जेल को देखते-समझते हुए लेखक फाँसीघर के सामने दूसरी मंज़िल की सबसे अंतिम कोठरी के सामने रुक जाता है। यह कमरा प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, विनायक दामोदर सावरकर का है। बीते हुए पलों की गूँगी स्मृतियाँ उन्हें घेर लेती हैं। सावरकर की यातनादायी जीवनी उनकी आँखों के सामने तैर जाती है।

व्याख्या : श्रीकांत वर्मा सन् 1986 की जनवरी में यह अनुभव करते हैं कि सावरकर स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में जिस कीर्ति के अधिकारी थे; उनसे उन्हें वंचित रखा गया। विवेच्य पंक्ति में जैसे लेखक स्वयं को कठघरे में खड़ा करता है और शायद बताना चाहता है कि आज़ादी के बाद शासक दल ने सावरकर की वैचारिकी को वर्जित मान लिया। उनका संबंध 'हिंदू महासभा' से होने के कारण वे सांप्रदायिक घोषित कर दिए गए। लेखक उनकी कोठरी के सामने खड़े होकर जैसे अपराधबोध से ग्रसित हो जाता है। सेल्यूलर जेल के कमरों की लंबाई-चौड़ाई 13.5 गुणा 7.5 फीट थी। सभी कैदियों को शौचालय ले जाने का समय नियत रहता था। तय समय के भीतर ही उन्हें यह कार्य करना पड़ता था। कभी-कभी कैदी को जेल के अपने कमरे के अंदर ही मल त्याग करना पड़ता था। जेल की कोठरी की दीवारों से मल और पेशाब की बदबू आती थी। सावरकर को अंग्रेज़ी हुकूमत ने 25-25 साल की दो अलग-अलग सज़ाएँ सुनाई थीं। अंडमान के सेल्यूलर जेल में सावरकर ने 9 साल 10 महीनों की सजा काटी थी। 11 जुलाई 1911 को सावरकर अंडमान पहुँचे थे। 1921 में उन्हें पुणे के यरवदा जेल में लाया गया था। राजनीतिक गतिविधियों पर आजीवन प्रतिबंध की शर्त पर वे 1924 में रिहा हुए। सावरकर के जीवन के आखिरी दो दशक राजनीतिक एकाकीपन और अपयश में बीते। सावरकर के योगदान पर आजाद भारत में गुमनामी की रोशनाई पोत दी गई। डायरी लेखक श्रीकांत वर्मा सेल्यूलर जेल में स्थापित सावरकर की मूर्ति के समक्ष श्रद्धा की मुद्रा में नतमस्तक हो जाते हैं।

विशेष : डायरी में पूरी ईमानदारी और स्पष्टता के साथ श्रीकांत वर्मा ने सावरकर की उपलब्धि और योगदान को उनकी जीवनीपरक वास्तविकता की रोशनी में दर्ज किया है। विवेच्य पंक्तियों में पश्चाताप की भावना प्रगाढ़ होकर प्रकट हुई है। भारतीय विमर्शकारों ने एक बार फिर से सावरकर के अवदानों की पड़ताल शुरू की है। श्रीकांत वर्मा ने बीसवीं सदी के सीमांत वर्षों में स्वयं को सावरकर के प्रकरण में संशोधित किया था। उनमें स्वीकार का साहस था। इसीलिए श्रीकांत वर्मा की डायरी का ऐतिहासिक महत्व है।

अंश-4

कुछ चिड़ियाँ मेरी खिड़की के शीशों से आकर टकरा जाती हैं। या वे मुझे जगा रही हैं, गहरी नींद से। जागो, तुम नींद में हो। नींद में चल रहे हो, नींद में लिख रहे हो, नींद में जीवन जी रहे हो।

प्रसंग : सावरकर की प्रतिमा को देखकर लेखक स्वयं से एकालाप कर रहे हैं। शाम ढल गई है। सैंकड़ों की तादाद में चिड़ियाँ मँडरा रही हैं।

व्याख्या : डायरी स्वयं से संवाद की विधा है। उसका सुंदर उदाहरण इस अंश में देखते ही बनता है। इतिहास के गलियारे में उतर कर लेखक क्रांतिकारी सावरकर की यंत्रणा का सहभोक्ता बन जाता है। वे अपराध बोध से ग्रसित हैं और स्वयं पश्चाताप की आँच में जल रहे हैं। आजादी के आंदोलन को कुछ चेहरों और नामों तक हमने सीमित कर दिया है। जबकि हमारी आजादी बहुत सारे नामों और विचारधाराओं का साझी प्रयास है। 'अंडमान' पाठ ऐसे गुमनाम व्यक्तित्वों का कृतज्ञ स्मरण है। लेखक अनुताप की अग्नि में स्वयं को संशोधित करते हैं। ऐसी मन:स्थिति में प्रबोधन के क्षण को लेखक डायरी में दर्ज करते हैं। विवेच्य वाक्य केवल लेखक पर ही नहीं लागू होता है। ये द्विअर्थी हैं। सावरकर के मूल्यांकन में पूरा भारतीय समाज सोया हुआ है। डायरी लेखक के व्यक्तिवाचक स्वर में हमारे पूरे जनमानस के समक्ष प्रश्न खड़ा करता है। 'नींद में लिख रहे हैं' वाक्य हमारे बुद्धिजीवियों एवं लेखकों से सवाल पूछ रहा है। इन छोटे-छोटे वाक्यों में लेखक का मन कुंदन की तरह तप कर पावन हो गया है।

विशेष : डायरी का विवेच्य अंश सरल वाक्य का बेजोड़ उदाहरण है। आत्मलाप डायरी का एक प्रमुख तत्व होता है। इस दृष्टिकोण से भी यह अंश उल्लेखनीय है। प्रस्तुत अंश सुदूर देश और काल की यात्रा कराता है।

पाठगत प्रश्न 17.2

1. पाठ से पाँच तत्सम शब्दों का चयन करें।
2. पाठ से पाँच उर्दू शब्दों का चयन करें।
3. 'फूँक-फूँक कर पीना' - मुहावरे का अर्थ है:-

   (क) जल्दीबाजी (ख) सावधानीपूर्वक

   (ग) लापरवाही (घ) आश्चर्यचकित
4. कॉमेडी का शाब्दिक अर्थ है -

   (क) सुखांत (ख) हास-परिहास

   (ग) कर्मयोगी (घ) काम

17.5 आपने क्या सीखा/ चित्र प्रस्तुति

1. भारत की मुख्य भूमि से दूर अंडमान द्वीप समूह अवस्थित है।
2. बंगाल की खाड़ी में इन द्वीपों की कुल संख्या तीन सौ है।
3. अंडमान द्वीप समूह का मुख्यालय पोर्ट ब्लेयर में स्थित है।
4. पोर्ट ब्लेयर में 'सेल्यूलर' कारावास का निर्माण अंग्रेजों ने स्वाधीनता सेनानियों को यातना देने के लिए किया था।
5. जिन कैदियों को फाँसी की सजा देनी होती थी, उन्हें काल-कोठरियों में लाकर रखा जाता था।
6. अंडमान के कैदखाने को अंग्रेजों ने नरक में रूपांतरित कर रखा था।
7. अंडमान की सारी सामुद्रिक सुंदरता नारकीय यंत्रणा के कारण 'काले पानी' के मुहावरे में बदल गई है।
8. द्वीप में पक्षी समूह बड़ी संख्या में हैं।
9. सेल्यूलर जेल बहुमंजिला इमारत थी।
10. स्वाधीनता संग्राम बहुत सारे क्रांतिकारियों के बलिदान का सुफल है।
11. डायरी में आत्माभिव्यक्ति की भरपूर गुंजाइश होती है।

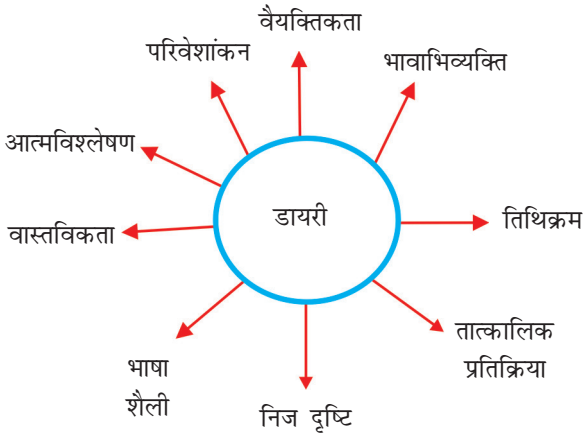

17.6 सीखने के प्रतिफल

- विविध साहित्यिक विधाओं के अंतर को समझते हुए उनके स्वरूप का विश्लेषण करते हैं।
- प्राकृतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों, घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को बोलकर/लिखकर व्यक्त करते हैं।
- सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र एवं भाषा-संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं।

- विभिन्न विषयों के आपसी संबंधों की समझ लिखकर, बोलकर एवं विचार-विमर्श के द्वारा व्यक्त करते हैं।
- भाषायी अभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यमों से राष्ट्र के प्रति लगाव को अभिव्यक्त करते हैं।
- भाषा-कौशलों के माध्यम से जीवन-कौशलों को आत्मसात करते हैं और अभिव्यक्त करते हैं।

17.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

चित्र : 17.4 : श्रीकांत वर्मा

यह पाठ श्रीकांत वर्मा द्वारा लिखा गया है। उनका जन्म 18 सितंबर, 1931 को बिलासपुर (म.प्र.) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा बिलासपुर के नगरपालिका स्कूल में हुई। यहीं से उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इंटर और बी.ए. की परीक्षा एम. वी.आर. कॉलेज बिलासपुर से पास करने के बाद प्राइवेट छात्र के रूप में नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. हिंदी की उपाधि प्राप्त की। 1955-56 में नवलेखन की पत्रिका 'नयी दिशा' निकाली। 1956 में नरेश मेहता के आमंत्रण पर दिल्ली आ गए और 'भारतीय श्रमिक में उपसंपादक नियुक्त हुए। 1958 में नरेश मेहता, कांता पित्ती के साथ हिंदी की विशिष्ट पत्रिका 'कृति' का प्रकाशन किया। 1964 से 1977 तक दिनमान में उपसंपादक और विशेष संवाददाता के पदों पर कार्य किया। 1976 में मध्यप्रदेश से राज्यसभा के सदस्य मनोनीत हुए। 25 मई 1986 को कैंसर से उपचार के दौरान न्यूयार्क, अमेरिका में निधन।

श्रीकांत वर्मा का कवि कर्म अत्यंत महत्वपूर्ण है। अज्ञेय ने श्रीकांत वर्मा को 'सनातन डिसेंट' का कवि कहा है। उनकी रचनाओं में आत्माभियोग और आत्मस्वीकार का स्वर सबसे अधिक मूल्यवान है। ये कवि के अतिरिक्त सिद्धहस्त कथाकार, आलोचक, अनुवादक, डायरी और यात्रा संस्मरण लेखक भी थे। इंटरव्यू विधा में भी इनका महत्वपूर्ण योगदान है। मरणोपरांत 1987 में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी सारी रचनाएँ श्रीकांत वर्मा रचनावली के आठ खंडों में संकलित हैं।

स्थानीय पुस्तकालय में जाकर बड़े लेखकों की डायरी खोजिए और पढ़िए। पुस्तकालयाध्यक्ष से निवेदन कीजिए कि डायरी विधा की उत्तम पुस्तकें उपलब्ध कराएँ। हिंदी में कई कालजयी डायरियाँ लिखी गई हैं। इन्हें पढ़ने की कोशिश कीजिए, इनमें से प्रमुख हैं–

(1) श्रीराम शर्मा – सेवाग्राम की डायरी

(2) अज्ञेय – बर्लिन डायरी ('एक बूँद सहसा उछली' में संकलित)

(3) दिनकर – दिनकर की डायरी
(4) हरिवंशराय बच्चन – प्रवासी की डायरी
(5) चंद्रशेखर – मेरी जेल डायरी
(6) श्रीकांत वर्मा – गरुड़ किसने देखा है
(7) यशपाल – मेरी जेल डायरी
(8) निर्मल वर्मा – धुंध से उठती धुन
(9) मालचंद तिवाड़ी – बोरूंदा डायरी
(10) अंबिकादत्त – रमते राम की डायरी

17.8 पाठांत प्रश्न

1. लेखक ने 'काला पानी' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।
2. लेखक के अनुसार अंडमान में द्वीपों की संख्या कितनी हैं? लिखिए।
3. गोरे शासक देशभक्त क्रांतिकारियों को किस जेल में रखते थे? प्रस्तुत कीजिए।
4. फाँसी से पहले कैदी के साथ क्या औपचारिकताएँ निभायी जाती थीं? वर्णन कीजिए।
5. वे कौन थे जो शेक्सपियर को घर भूल आए थे?
6. 'फाँसीघर' में एक साथ कितने व्यक्तियों को फाँसी देने की व्यवस्था थी?
7. सबसे खतरनाक कैदी किसे माना जाता था?
8. लेखक के मन में किसके प्रति पूर्वाग्रह था?
9. जेल के बाहर किस स्वाधीनता सेनानी की प्रतिमा थी?
10. किसे सावरकर के सांप्रदायिक होने का तर्क मंजूर नहीं है? स्पष्ट कीजिए।
11. जेल से लौट कर किसने अपने कमरे में बत्ती नहीं जलायी?

17.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (क) 3. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1 1. (ग) 2. (घ) 3. (क)

17.2 1. द्वीप, निष्कासित, यंत्रणा, कारागृह, दशक
2. बदशक्ल, मनहूस, उम्मीद, जुर्म, तलाश
3. बुद्धिमान व्यक्ति छाछ भी फूँक-फूँक कर पीता है।
4. (क)